नाथ सम्प्रदाय और उसका साहित्य

डा0 अखण्ड प्रताप सिंह*

सहायक आचार्य

राधिका महाविद्यालय, करवल

मझगांवा, गगहा, गोरखपुर।

*Email: akhandpratapsingh5688@gmail.com

हिन्दू धर्म में साधना प्रद्धति के लिए अनेक पन्थ है जिनमें एक पंथ नाथ सम्प्रदाय भी है। नाथ सम्प्रदाय का अभ्युदय मध्य युग में हुआ। इसमें बौद्ध शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखाई देता है। यह हठ योग की साधना पद्धति पर आधारित पंथ है। इस सम्प्रदाय के प्रथम गुरू शिव है और यही इस सम्प्रदाय के आराध्य भी। इसके अलावा इस सम्प्रदाय में अनेक गुरू हुए गुरू मच्छिन्द्रनाथ/मत्स्येन्द्र नाथ तथा गुरू गोरखनाथ सर्वाधिक प्रसिद्ध। नाथ सिद्धों को ब्रजायिनी सिद्धों से कभी घनिष्ठ येाग था। नाथ सम्प्रदाय के समय को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नवीं शताब्दी को मानते हैं, नाथों की संख्या नौ है।

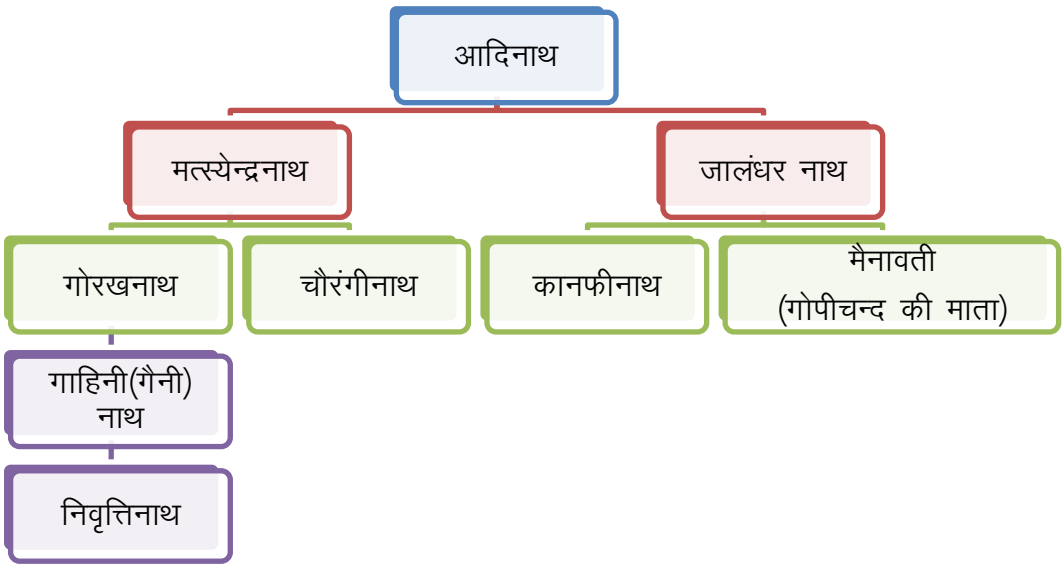

नाथ सम्प्रदाय और भक्ति साहित्य पर प्रकाश डालते हुए प्रदीप कुमार राव, ओमजी उपाध्याय ने लिखा ''भारतीय भक्ति परम्परा व साधना पद्धति में नाथ पंथ का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भारतीय इतिहास की वह प्रबल धारा है जो भारत वर्ष में अखण्ड रूप से कई शताब्दियों तक बहती रही और जिसने विभिन्न साधना पद्धतियों को आत्मसात करते हुए अपना एक स्वतन्त्र रूप स्थिर किया तथा परवर्ती काल की विभिन्न साधना पद्धतियों और साहित्य की धाराओं को प्रभावित किया। ऐतिहासिक रूप से नाथ पंथ बौधों की ब्रजायन साखा से सम्बद्ध माना जाता है किन्तु गुरू गोरखनाथ ने बौद्धों की ब्रजायन साखा से निकालकर एक परिष्कृत रूप दिया तथा व्यवस्थित किया।[2]

प्रदीप कुमार राव ओम जी उपाध्याय ने नाथ पंथ को ही भक्ति आन्दोलन की नींव मानी है वे लिखते हैं ''भक्ति आन्दोलन का विशाल भवन नाथ पंथ की दृढ़ भूमि पर खड़ा हुआ था। अवधेय है कि शताब्दियों पूर्व से ही नाथ पंथ के योगी, साधु व साधक धर्म व योग के माध्यम से सामाजिक विकृतियों को मिटाने का अभियान चला रहे थे। गुरू गोरखनाथ भारतीय अध्यात्म साधना के दीप स्वतम्भ थे उनकी आचरण प्रणवता तथा वैचारिक लोकोन्मुखता का पूरा मध्य काल ऋणी है। ऐसी स्थिति में भक्ति–कालीन साहित्य का नाथ पंथ से रस ग्रहण करना स्वाभाविक है कबीर व जायसी तो नाथ पंथी योग का प्रत्यक्ष अनुगमन करते दिखाई पड़ते हैं। स्वामी रामानन्द द्वारा योगपरक ' सिद्धान्त पटल' नामक ग्रन्थ की रचना कालान्तर में सैकड़ों संतकवियों द्वारा योग समन्वित पदों का निर्माण ईश्वर भक्ति हेतु चित्त को एकाग्र करने का उपाय वाह्चारों की भर्त्सना, आडम्बरों का निषेध व सामाजिक विषमताओं के विरूद्ध दो टूक बात कहने का साहस भक्ति –संतो को गुरू गोरक्षनाथ व नाथ पंथ से ही प्राप्त हुआ था।''[3]

आचार्य शुक्ल ने गोरखनाथ से नाथ साहित्य का सृजन मान्य है और उनकी शिक्षा हिन्दू –मुस्लिम दोनों के लिए आकर्षण का विषय थी। आचार्य शुक्ल अपने इतिहास में इसका जिक्र इस प्रकार करते हैं ''गोरखनाथ की हठयोग साधना, एकेश्वरवाद को लेकर चली थी अतः उसमें मुसलमानों के लिए भी आकर्षण था ईश्वर से मिलाने वाले योग हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिए एक सामान्य साधना के रूप में आगे रखा जा

सकता है, यह बात गोरखनाथ को दिखाई पड़ी थी उसमें मुसलमानों को अप्रिय मूर्तिपूजा और बहुदेवोपासना की आवश्यकता न थी अतः उन्होंने दोनों के विद्वेषभावना को दूर करके साधना का एक सामान्य मार्ग निकलने की संभावना समझी थी और वे उसका संस्कार अपनी शिष्य परम्परा में छोड़ गये थे। नाथ सम्प्रदाय के सिद्धान्तों, ग्रन्थों में ईश्वरोपासना के बाह्यविधाओं के प्रति उपेक्षा प्रकट की गयी है, घट के भीतर ही ईश्वर को प्राप्त करने पर जोर दिया गया है, वेदशास्त्र का अध्ययन व्यर्थ ठहराकर विद्वानों के प्रति अश्रद्धा प्रकट की गयी है तीर्थाटन आदि निष्फल कहे गये हैं।[4]

नाथ सम्प्रदाय में भी सिद्धों की भॉति नीची और अशिक्षित श्रेणियों के लोग ही आये उन्होनें छुआछूत और जाति–पाति का खण्डन किया। आचार्य शुक्ल ने लिखा ''नाथ सम्प्रदाय भी जब फैला, तब उसमें भी जनता नीची और अशिक्षित श्रेणियों के बहुत से लोग आये जो शास्त्र ज्ञान सम्पन्न न थे जिसकी बुद्धि विकास बहुत सामान्य कोटि का था पर अपने को रहस्यदर्शी प्रदर्शित करने के लिए शास्त्रज्ञ पीड़ितों और विद्वानो ंको फटकारना भी वे जरूरी समझते थे।[5]

नाथ पंथी साहित्य में बजरंग बली को विशेष स्थान दिया गया है इस सन्दर्भ में वेद प्रकाश पाण्डेय ने लिखा ''नाथ पंथी साहित्य के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नाथों सिद्धों ने वायुपुत्र हनुमान के प्रति आदर भाव कम नही रहा है। अलख निरंजन के उपासक होते हुए भी नाथ योगियों ने हनुमान के प्रति समय समय पर अपनी श्रद्धा भक्ति निवेदित की है। नाथ–पंथ के परम तत्व के रूप में शिव (योगीराज) की प्रतिष्ठा है। हनुमान और शिव अभिन्न है अतवः इस पंथ में हनुमान के प्रति आदर भाव होने के कारण उनकी (हनुमान की) शिव के अवतार के रूप में स्वीकृति हो सकती है।[6]

नाथ पंथ की महत्वपूर्ण विशेषता उनका अनुशासन प्रिय होना तथा चरित्र की पवित्रता पर विशेष जोर देना रहा है। इस संदर्भ में वे प्रकाश पाण्डेय जी लिखते हैं ''इस सम्प्रदाय की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि यह सम्प्रदाय चरित्र की पवित्रता, नैतिक नियमों के कड़ाई से पालन, हृदय की सच्चाई एवं भक्ति भाव को प्रमुखता देता है यहाँ यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि योगियों की पूजा विषयक उपर्युक्त मान्यता और

आदर्श यदि एक ही साथ किसी एक देवता (व्यक्ति के रूप में माने तो भी) पूरी तरह चरितार्थ होते हुए दिखाई देते हैं तो निश्चित ही हनुमान में हनुमान निश्चित ही एक आदर्श योगी के रूप में मान्य है। चरित्र की पावना, नैतिक मूल्यों की रक्षा सेवा त्याग हृदयगत सच्चाई और भाव भक्ति सम्बन्धी उच्चतम गहना के लिए हनुमान से बढ़कर किसी और आदर्श की कल्पना नहीं की जा सकती।''[7]

नाथ साहित्य की रचनाओं के सन्दर्भ में प्रकाश डालते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा '' हिन्दी में गोररक्षनाथ के नाम से प्रचलित अनेक रचनाएं प्राप्त हुए हैं बहुत सी रचनाएं संस्कृत की है इन पुस्तकों के अतिरिक्त हिन्दी में भी गोरक्षनाथ की कई पुस्तकें पाइ जाती है। स्वर्गीय डा0 पीताम्बर दत्त बड़थवाल ने गोरखबानी में उनमें से कुछ का प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन में कराया था।[8]

डॉ0 पिताम्बर बड़थवाल ने अनेक प्रतियों की जॉच करके इनमें से प्रथम चौदह को प्रकाशन योग्य समझा है। ज्ञान चौतिसा को समय न मिलने के कारण वे प्रकाशित न करा सके बाकी तेरह पुस्तकों को उन्होंने प्रकाशित कराया था सबदी गोरखनाथ की प्रमाणित रचना है।

संवाद ग्रंथ गोरखनाथ पर चलने वाली पुस्तकों में ऐसा ज्ञान पड़ता है कि दो महात्माओं के संवाद रूप में अपने दार्शनिक मत और धार्मिक विश्वास पद्धति को प्रकट करने की इस पद्धति का बहुल प्रचार नाथ पंथियों ने ही किया।

गोरखनाथ के पद– गोरखनाथ के नाम पर जो पद मिलते हैं वे कितने पुराने है यह बता सकना कठिन है इनमें से कुछ अवश्य बहुत पुराने और गोरक्ष कथित हो सकते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि नाथ सम्प्रदाय अति प्राचीन है और उसका साहित्य विपुल भण्डारों से भरा पड़ा है। नाथों ने चरित्र की पावनता पर विशेष बल दिया तथा अपने हठयोग के माध्यम से स्वयं अनुशासित रहकर समाज को अपनी ओर आकर्षित किया इसे हिन्दु मुसलमान दोनों ही ने ग्राह्य किया। नाथों का प्रभाव जितना सन्त साहित्य पर पड़ा उतना ही सूफी साहित्य पर भी इस सम्प्रदाय ने जाति–पाति छुआछूत का खण्डन किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, 22वां संस्करण (2018) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–31

2– संम्पादक प्रदीप राव, ओम जी उपाध्याय नाथ पंथ और भक्ति आन्दोलन (सम्पादकीय) प्रथम संस्करण 2011 चक्रव्यूह प्रकाशन पृष्ठ सं0–(iii)

3– संम्पादक प्रदीप राव, ओम जी उपाध्याय नाथ पंथ और भक्ति आन्दोलन (सम्पादकीय) प्रथम संस्करण 2011 चक्रव्यूह प्रकाशन पृष्ठ सं0–(ix)

4– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण–2010 नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–31

5– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण–2010 नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–32

6– संम्पादक प्रदीप राव, ओम जी उपाध्याय नाथ पंथ और भक्ति आन्दोलन (सम्पादकीय) प्रथम संस्करण 2011 चक्रव्यूह प्रकाशन पृष्ठ सं0–238

7– संम्पादक प्रदीप राव, ओम जी उपाध्याय नाथ पंथ और भक्ति आन्दोलन (सम्पादकीय) प्रथम संस्करण 2011 चक्रव्यूह प्रकाशन पृष्ठ सं0–242

8– हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, 22वां संस्करण (2018) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–32